आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024
Received: 20/06/2024; Published: 26/06/2024

कविता

मौत

- **हूबनाथ ,**
प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

तुम चोरी से मत आना
जैसे आती हैं दीमकें
दरवाज़े की चौखट की
दरारों में

सांप्रदायिक छूरे की तरह
धोखे से
पीठ में मत धँस जाना

पगलाए तानाशाह की
क्रूरता बनकर
बम की तरह बरस मत जाना

बाढ़ सूखा अकाल भूकंप
की तरह
सब कुछ तहस नहस करते
कभी मत आना

मैं तुम्हें इसलिए नहीं रोक रहा

कि मैं डरता हूँ तुमसे
हालाँकि मैं जानता हूँ
कि दुनिया में सबसे ताक़तवर
अकेली तुम ही हो

तुम्हारे आगे
न पीरों की चली
न अवतारों पैगंबरों की
न संत महात्माओं
क्रूरतम तानाशाहों की

कायनात के आरंभ से
तुमसे कोई नहीं जीता
मैं भी नहीं जीतूँगा

किंतु हारने से पहले
मैं तुमसे लड़ना चाहता हूँ
संघर्ष करना चाहता हूँ

कायरों की तरह
घुटने टेक कर
या एड़िया रगड़कर
या घिसट घिसटकर
मैं हार मान लेना नहीं चाहता

मैं चाहता हूँ
कि तुम आओ
तो ऐसे आओ जैसे
गांधी को गिरफ़्तार करने
आती थी पुलिस

या असेंबली में
बम फेंकने के बाद

भगतसिंह को पकड़ने

उस तरह
तुम सामने से आओ
मुझसे टकराओ
मैं पूरी ताक़त भर
लड़ूँ तुमसे

और आख़िर हारकर
एक योद्धा की तरह
एक इंक़लाबी की तरह
चल दूँ तुम्हारे साथ

न मुझे शर्म आए
न तुम्हें ही दुख हो
कि आख़िर किसको उठा लाए!

वैसे तुमने
कब किसकी सुनी है
पर मेरा फ़र्ज़ था
सो मैंने कह दिया

****